



अयोध्या में सूर्य तलिक परियोजना

चर्चा में क्यों?

वर्जिज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तहत एक स्वायत्त निकाय, [भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान \(Indian Institute of Astrophysics- IIA\)](#) ने अयोध्या में **सूर्य तलिक परियोजना** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुख्य बंदि:

- सूर्य तलिक परियोजना के तहत चैत्र मास में **श्री राम नवमी** के अवसर पर **दोपहर 12 बजे श्री राम लला** के माथे पर **सूर्य की रोशनी लाई गई**।
- IIA टीम ने **सूर्य की स्थिति, ऑप्टिकल/प्रकाशकी ससिस्टम के डिज़ाइन व इष्टतम उपयोग** की गणना की और साइट पर एकीकरण व संरक्षण का प्रदर्शन किया।
 - IIA टीम ने **19 वर्षों के एक चक्र** के लिये श्री राम नवमी के कैलेंडर दिनों की पहचान हेतु गणना का नेतृत्व किया, इसके बाद इसकी पुनरावृत्ति, राम नवमी की कैलेंडर तिथियों पर आकाश में स्थिति का अनुमान लगाया।
 - टीम ने मंदिर के शीर्ष से मूर्ति के माथे तक सूर्य की रोशनी लाने के लिये एक **ऑप्टो-मैकेनिकल प्रणाली** के डिज़ाइन का भी नेतृत्व किया, ससिस्टम में **दर्पण और लेंस के आकार, आकृति तथा स्थान का निर्धारण** लगाया ताकि लगभग 6 मिनट तक मूर्ति पर पर्याप्त रोशनी पड़ सके।
- **डिवाइस का निर्माण ऑप्टिका, बंगलोर द्वारा** किया गया है और साइट पर ऑप्टो-मैकेनिकल ससिस्टम का **कार्यान्वयन वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (CSIR-CBRI)** द्वारा किया जा रहा है।

भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (Indian Institute of Astrophysics- IIA)

- IIA पूर्णतः **वर्जिज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित** भारत का एक प्रमुख शोध संस्थान है जो खगोल वर्जिज्ञान, खगोल भौतिकी और संबंधित क्षेत्रों के अध्ययन के लिये समर्पित है।
- इसमें कई **ओब्ज़र्वेशन सुविधाएँ** हैं, जिनमें तमलिनाडु के कवलूर में **वेणु बपू वेधशाला**, कर्नाटक में **गौरीबदिनूर रेडियो वेधशाला** और लद्दाख, जम्मू एवं कश्मीर में **हनले वेधशाला** शामिल हैं।